वैदिक शिक्षा प्रणालीः दर्शन, संरचना, शिक्षण–पद्धति एवं समकालीन प्रासंगिकता

12

डॉ विकास शर्मा

सारांश

वैदिक शिक्षा प्रणाली विश्व की प्राचीनतम और समग्र शिक्षापद्धतियों में से एक है, जिसका आधार भारतीय वैदिक साहित्य में निहित आध्यात्मिक, नैतिक तथा दार्शनिक चिंतन पर आधारित है। इसका मुख्य उद्देश्य मनुष्य के बौद्धिक, नैतिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास के माध्यम से उसके व्यक्तित्व का पूर्ण उत्कर्ष करना था। गुरुकुल प्रणाली, गुरु–शिष्य परंपरा, मूल्य–आधारित जीवन, आत्मसंयम, ब्रह्मचर्य तथा अनुभवात्मक अधिगम इसकी प्रमुख विशेषताएँ थीं। शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि आत्मबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व की साधना माना जाता था। देशी एवं विदेशी विद्वानों ने इस प्रणाली को चरित्र–निर्माण, नैतिकता और जीवनोपयोगी ज्ञान के समन्वय का आदर्श मॉडल माना है। यद्यपि समय के साथ सामाजिक एवं राजनीतिक कारणों से इसका ह्रास हुआ, तथापि इसके मूल सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। वर्तमान शैक्षिक संकट के संदर्भ में वैदिक शिक्षा के मूल्य आधुनिक शिक्षा को अधिक मानवीय, संतुलित और जीवनोपयोगी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

मुख्य शब्दः *वैदिक शिक्षा, गुरुकुल प्रणाली, गुरु–शिष्य परंपरा, भारतीय ज्ञान परंपरा, मूल्य–आधारित शिक्षा, सर्वांगीण विकास, चरित्र निर्माण, ब्रह्मचर्य आश्रम, समग्र शिक्षा*

1. प्रस्तावना

मानव सभ्यता के इतिहास में शिक्षा की विविध प्रणालियाँ विकसित हुईं, परन्तु प्राचीन भारत की वैदिक शिक्षा प्रणाली अपनी मौलिकता, समग्रता और आध्यात्मिक गाम्भीर्य के कारण विशेष महत्त्व रखती है। वैदिक कालीन समाज में शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन का साधन न मानकर जीवन के रूपान्तरण का माध्यम समझा जाता था। उस समय यह धारणा प्रबल थी कि मनुष्य की वास्तविक प्रगति

डॉ विकास शर्मा

सहायक प्रोफेसर, वाणिज्य विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली, (महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली) *ईमेलः vikasharma1583@gmail.com*

Publisher: Anu Books, DOI: https://doi.org/10.31995/Book.AB356-A26. Ch.12

Book Name : भारतीय ज्ञान परम्परा और सामाजिक विज्ञान

Plagiarism Report: 10%

बाह्य साधनों से नहीं, बल्कि आन्तरिक जागरण से होती है, और शिक्षा उसी जागरण की प्रक्रिया है।

विद्या ददाति विनयं विनयाद् याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति धनात् धर्मं ततः सुख

अर्थः विद्या से विनय (नम्रता) आती है, विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त होता है।

वैदिक शिक्षा का आधार वेद, ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद जैसे ग्रंथ थे, जिनमें केवल धार्मिक अनुष्ठानों का वर्णन नहीं, बल्कि ब्रह्माण्ड, मानव जीवन, समाज, नैतिकता और ज्ञान की प्रकृति पर गहन विचार प्रस्तुत किया गया है। **डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन** के अनुसार उपनिषद"मानव आत्मा की स्वतंत्रता और सार्वभौमिकता का घोष" हैं तथा भारतीय शिक्षा–दर्शन इन्हीं पर आधारित है।

अल्तेकर का मत है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य "व्यक्ति के बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक पक्षों का समन्वित विकास" था। इसी प्रकार **स्वामी विवेकानन्द** ने शिक्षा को "मनुष्य में निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति" कहा है। यह परिभाषा वैदिक शिक्षा के वास्तविक स्वरूप को अत्यंत सटीक रूप से अभिव्यक्त करती है।

गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से दी जाने वाली यह शिक्षा पूर्णतः आवासीय थी, जिसमें विद्यार्थी गुरु के संरक्षण में रहकर अध्ययन करते थे। शिक्षा का वातावरण प्राकृतिक, अनुशासित और आध्यात्मिक होता था, जिससे ज्ञान केवल बौद्धिक स्तर पर न रहकर जीवन का अंग बन जाता था। पाश्चात्य विद्वान **मैक्स मूलर** ने भी भारतीय परंपरा की प्रशंसा करते हुए लिखा कि "यदि हम मानवता के उच्चतम आध्यात्मिक विचारों की खोज करें, तो हमें भारत की ओर देखना होगा।" इस प्रकार वैदिक शिक्षा प्रणाली केवल भारत की धरोहर नहीं, बल्कि विश्व की बौद्धिक संपदा भी है।

2. वैदिक शिक्षा का दार्शनिक आधार

वैदिक शिक्षा प्रणाली का मूल आधार भारतीय दर्शन है, जो जीवन को आध्यात्मिक दृष्टि से देखता है। इस दर्शन के अनुसार ब्रह्म ही परम सत्य है और समस्त जगत उसी का प्रकट रूप है। मानव जीवन का उद्देश्य इस सत्य का अनुभव करना तथा अपने अस्तित्व को सार्वभौमिक चेतना से एकात्म करना है। शिक्षा इस लक्ष्य की प्राप्ति का प्रमुख साधन थी। वैदिक शिक्षा का परम उद्देष्य–आत्ममुक्ति और मोक्ष। वैदिक चिंतन में "ऋत" की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो ब्रह्माण्डीय व्यवस्था और नैतिक नियमों का प्रतीक है। मनुष्य का कर्तव्य इस व्यवस्था के अनुरूप जीवन व्यतीत करना है। शिक्षा व्यक्ति को धर्म, कर्तव्य और सत्य के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती थी।

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार भारतीय शिक्षा का लक्ष्य "मनुष्य को निर्भीक, आत्मविश्वासी और आध्यात्मिक रूप से जागृत बनाना" है। इसी प्रकार **डॉ. राधा कृष्णन** ने कहा कि भारतीय शिक्षा "ज्ञान और आत्मानुभूति का समन्वय" है।

पाश्चात्य विदुषी **एनी बेसेन्ट** ने भारतीय शिक्षा की विशेषता बताते हुए कहा कि यह"मनुष्य को केवल बुद्धिमान ही नहीं, बल्कि सदाचारी और आध्यात्मिक भी बनाती है।" इस प्रकार वैदिक शिक्षा प्रणाली का दार्शनिक आधार भौतिकतावादी न होकर आध्यात्मिक और नैतिक था, जो इसे आधुनिक उपयोगितावादी शिक्षा से भिन्न बनाता है।

2.1 ज्ञान के रूप में मुक्ति

वैदिक परंपरा में ज्ञान का अर्थ केवल सूचना या बौद्धिक क्षमता नहीं, बल्कि आत्मबोध है। उपनिषदों में विद्या और अविद्या के द्वैत का वर्णन मिलता है, जहाँ अविद्या संसारिक बंधनों का कारण है और विद्या मुक्ति का साधन।

सा विद्या या विमुक्तये।

–विष्णु पुराण

अर्थः वही विद्या वास्तविक है जो मनुष्य को अज्ञान, दुःख और सांसारिक बंधनों से मुक्त करे। वैदिक शिक्षा का मूल सूत्र है।

ज्ञान को आत्मा और ब्रह्म की एकता की अनुभूति तक पहुँचने का साधन माना गया। इस दृष्टि से शिक्षा का उद्देश्य परीक्षा उत्तीर्ण करना या व्यवसाय प्राप्त करना नहीं, बल्कि आत्मसाक्षात्कार था।

मैक्स मूलर ने लिखा कि उपनिषद "मानव विचार की उच्चतम उड़ान" का प्रतिनिधित्व करते हैं। उनके अनुसार भारतीय मनीषा ने ज्ञान को आध्यात्मिक स्वतंत्रता से जोड़ा, जो विश्व की अन्य सभ्यताओं में दुर्लभ है।

2.2 आध्यात्मिक एवं लौकिक ज्ञान का समन्वय

वैदिक शिक्षा में आध्यात्मिक और सांसारिक ज्ञान के बीच कोई विरोध नहीं था। विज्ञान, गणित, चिकित्सा, कृषि, राजनीति और कला जैसे विषय भी पढ़ाए जाते थे। इससे स्पष्ट होता है कि प्राचीन भारतीय शिक्षा केवल धार्मिक नहीं थी, बल्कि बहुआयामी थी। **राधाकृष्णन** के अनुसार भारतीय संस्कृति में "ज्ञान के सभी रूप अंततः सत्य की खोज के साधन" माने जाते हैं। इसी प्रकार **एनी बेसेन्ट** ने कहा कि भारतीय शिक्षा "जीवन के सभी पक्षों को एकीकृत करती है और मनुष्य को संतुलित व्यक्तित्व प्रदान करती है।" यह समन्वयात्मक दृष्टिकोण आधुनिक शिक्षा के विखंडित स्वरूप के विपरीत था, जहाँ विषयों के बीच स्पष्ट विभाजन देखा जाता है।

2.3 नैतिक एवं चारित्रिक विकास

वैदिक शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य चरित्र निर्माण था। सत्य, अहिंसा, दया, आत्मसंयम, ब्रह्मचर्य, विनम्रता और कर्तव्यपालन को सर्वोच्च गुण माना जाता था। शिक्षा का उद्देश्य केवल बुद्धि का विकास नहीं बल्कि सदाचार की स्थापना था।

स्वामी विवेकानन्द ने स्पष्ट कहा कि "हमें ऐसी शिक्षा चाहिए जो चरित्र का निर्माण करे, मन की शक्ति बढ़ाए और व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाए।"

आर. के. मुखर्जी के अनुसार प्राचीन भारतीय शिक्षा "नैतिक अनुशासन पर आधारित थी, जिससे समाज में स्थिरता और सामंजस्य बना रहता था।"

3. संस्थागत ढाँचा : गुरुकुल प्रणाली

गुरुकुल वैदिक शिक्षा का मुख्य संस्थान था, जो सामान्यतः वन या शांत प्राकृतिक स्थानों में स्थित होता था। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को सांसारिक विकर्षणों से दूर रखकर एकाग्रता और अनुशासन का वातावरण प्रदान करना था। गुरुकुल शब्द का अर्थ है "गुरु का परिवार"। विद्यार्थी गुरु के साथ रहकर शिक्षा प्राप्त करते थे, जिससे शिक्षा व्यक्तिगत और जीवंत बन जाती थी।

आर. के. मुखर्जी के अनुसार गुरुकुल प्रणाली "व्यक्तित्व के समग्र विकास के लिए आदर्श व्यवस्था" थी, क्योंकि इसमें शिक्षा केवल पाठ्यज्ञान तक सीमित नहीं रहती थी बल्कि व्यवहार, अनुशासन और आध्यात्मिक साधना का समावेश होता था।

मैक्स मूलर ने भारतीय गुरु–शिष्य परंपरा को विश्व की अद्वितीय शैक्षिक व्यवस्था बताते हुए कहा कि इसमें "ज्ञान के साथ जीवन जीने की कला भी सिखाई जाती थी।"

3.1 आवासीय स्वरूप

गुरुकुल पूर्णतः आवासीय होते थे। विद्यार्थी गुरु के साथ रहकर आश्रम के कार्यों में भाग लेते थे। जैसे जल लाना, लकड़ी संग्रह करना, पशुओं की देखभाल आदि। इससे उनमें श्रम का सम्मान, आत्मनिर्भरता और सहयोग की भावना विकसित होती थी।

यह व्यवस्था आधुनिक बोर्डिंग स्कूलों से भिन्न थी, क्योंकि यहाँ गुरु और शिष्य के बीच पारिवारिक संबंध होता था। शिक्षा निरंतर चलती रहती थी और जीवन का प्रत्येक अनुभव शिक्षण का माध्यम बन जाता था।

3.2 अनौपचारिक संगठन

गुरुकुलों में किसी प्रकार का केंद्रीकृत प्रशासन या निर्धारित पाठ्यक्रम नहीं था। प्रत्येक गुरु अपनी योग्यता और परंपरा के अनुसार शिक्षा प्रदान करता था।

अल्तेकर के अनुसार यह लचीलापन व्यक्तिगत प्रतिभा के विकास के लिए अत्यंत उपयोगी था, क्योंकि विद्यार्थी को उसकी रुचि और क्षमता के अनुसार मार्गदर्शन मिलता था।

3.3 सामाजिक सहयोग

समाज गुरुकुलों को आर्थिक और सामाजिक सहायता प्रदान करता था। शिक्षा को पवित्र कर्तव्य माना जाता था, न कि व्यापार। गुरु प्रायः विद्यार्थियों से शुल्क नहीं लेते थेय अध्ययन पूर्ण होने पर शिष्य स्वेच्छा से गुरु–दक्षिणा प्रदान करता था। **एनी बेसेन्ट** ने लिखा कि भारतीय समाज में शिक्षा का सम्मान इतना अधिक था कि विद्वान को सर्वोच्च प्रतिश्ठा प्राप्त थी।

4. प्रवेश एवं दीक्षा : उपनयन

वैदिक शिक्षा में प्रवेश उपनयन संस्कार द्वारा होता था। यह संस्कार बालक के जीवन में आध्यात्मिक और बौद्धिक जागरण का प्रतीक था। इसके पश्चात वह ब्रह्मचारी कहलाता था और संयमित जीवन व्यतीत करता था।

उपनयन का शाब्दिक अर्थ है"गुरु के समीप ले जाना।" यह केवल शैक्षिक प्रक्रिया का आरंभ नहीं, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक अनुशासन की दीक्षा भी थी।

अल्तेकर के अनुसार प्रारंभिक वैदिक काल में स्त्रियों को भी शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था। गार्गी और मैत्रेयी जैसी विदुषियों के उदाहरण इसका प्रमाण हैं।

5. वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम

वैदिक शिक्षा का पाठ्यक्रम अत्यंत व्यापक और संतुलित था, जिसमें धार्मिक, दार्शनिक तथा लौकिक सभी विषय सम्मिलित थे।

5.1 धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रंथ

चारों वेद, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद शिक्षा का आधार थे। इनमें सृष्टि, आत्मा, धर्म, कर्म और मोक्ष के विषय में गहन विचार प्रस्तुत किए गए हैं।

5.2 वेदांग

वेदों की सही समझ के लिए शिक्षा (ध्वनिविज्ञान), व्याकरण, छंद, निरुक्त, कल्प और ज्योतिष पढ़ाए जाते थे। यह प्राचीन भारतीय विद्वत्ता की उच्च अवस्था को दर्शाता है।

5.3 लौकिक विषय

इसके अतिरिक्त गणित, आयुर्वेद, कृषि, राजनीति, अर्थशास्त्र, युद्धकला, संगीत और ललित कलाओं का भी अध्ययन कराया जाता था। **शर्मा (2002)** के अनुसार यह बहुआयामी पाठ्यक्रम समाज की व्यावहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता था।

6. शिक्षण–पद्धति

वैदिक शिक्षा प्रणाली की शिक्षण–पद्धति अत्यंत विशिष्ट, जीवनपरक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से परिपक्व थी। इसका मूल आधार मौखिक परंपरा, अनुशासन, अनुभवात्मक अधिगम तथा आंतरिक चिंतन था। उस समय लेखन सामग्री का सीमित उपयोग होने के कारण ज्ञान का संरक्षण मुख्यतः स्मृति और श्रुति पर निर्भर था। किंतु यह केवल व्यावहारिक बाध्यता नहीं थी, बल्कि वैदिक परंपरा में ध्वनि और शब्द की पवित्रता में गहन विश्वास भी इसका कारण था।

अल्तेकर के अनुसार प्राचीन भारतीय शिक्षण–पद्धति "ज्ञान को केवल बौद्धिक स्तर पर न रखकर व्यवहार और साधना के माध्यम से जीवन में उतारने" पर बल देती थी। इसी प्रकार स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि "मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों का जागरण" करना है।

पाश्चात्य विद्वान **मैक्स मूलर** ने वेदों की मौखिक परंपरा की प्रशंसा करते हुए कहा कि इतनी शुद्धता से हजारों वर्षों तक ग्रंथों का संरक्षण मानव इतिहास में अद्वितीय है।

6.1 मौखिक परंपरा

वैदिक ज्ञान को "श्रुति" कहा गया, जिसका अर्थ है जो सुना जाए। गुरु शिष्य को मंत्रों और ग्रंथों का उच्चारण सुनाकर सिखाते थे, और शिष्य उन्हें कंठस्थ

करता था। उच्चारण की शुद्धता पर अत्यधिक बल दिया जाता था, क्योंकि यह माना जाता था कि ध्वनि स्वयं शक्ति का स्वरूप है।

विशेष प्रकार की पाठ विधियाँ जैसे पदपाठ, क्रमपाठ, जटापाठ आदि विकसित की गई थीं, जिनके माध्यम से पाठ में त्रुटि की संभावना न्यूनतम हो जाती थी। राधाकृष्णन के अनुसार यह प्रणाली "मानव स्मृति की अद्‌भुत क्षमता का उदाहरण" है।

6.2 पुनरावृत्ति एवं अभ्यास

बार–बार अभ्यास वैदिक शिक्षण का मूल सिद्धांत था। निरंतर पुनरावृत्ति से न केवल स्मरण शक्ति विकसित होती थी, बल्कि मन की एकाग्रता और धैर्य भी बढ़ता था।

स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।

–तैत्तिरीयोपनिषद्

अर्थः स्वाध्याय और शिक्षण (पठन–पाठन) में कभी आलस्य नहीं करना चाहिए।

पुनरावृत्ति और अभ्यास आधारित शिक्षण का मूल सूत्र।

आधुनिक मनोवैज्ञानिक भी स्वीकार करते हैं कि दीर्घकालिक स्मृति के निर्माण में पुनरावृत्ति का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इस दृष्टि से वैदिक पद्धति अत्यंत वैज्ञानिक कही जा सकती है।

6.3 संवाद एवं वाद–विवाद

वैदिक साहित्य, विशेषतः उपनिषदों में, संवाद शैली का व्यापक उपयोग मिलता है। गुरु और शिष्य के बीच प्रश्नोत्तर के माध्यम से ज्ञान का विकास होता था। इससे जिज्ञासा, तर्कशक्ति और स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहन मिलता था।

गार्गी और याज्ञवल्क्य के मध्य ब्रह्मविद्या पर हुए संवाद इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। राधाकृष्णन के अनुसार उपनिषद "आध्यात्मिक दर्शन के महान संवाद" हैं।

6.4 ध्यान एवं मनन

वैदिक शिक्षा में ध्यान और आत्मचिंतन को अत्यंत महत्व दिया जाता था। ज्ञान को केवल सुनकर या पढ़कर ग्रहण करना पर्याप्त नहीं माना जाता था उसे अनुभव करना आवश्यक था।

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः।

–बृहदारण्यकोपनिशद्

अर्थ आत्मा को जानने के लिए पहले सुनना, फिर मनन करना और फिर ध्यान द्वारा अनुभव करना आवश्यक है।

वैदिक शिक्षा का तीन–स्तरीय अधिगम मॉडल।

योग और ध्यान के माध्यम से विद्यार्थी मानसिक स्थिरता, आत्मनियंत्रण और अंतर्दृष्टि विकसित करते थे। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार ध्यान मनुष्य को "अपनी वास्तविक शक्ति का अनुभव" कराता है।

6.5 सेवा द्वारा अधिगम

गुरुकुल जीवन में श्रम और सेवा का विशेष स्थान था। विद्यार्थी आश्रम के दैनिक कार्यों में सक्रिय भाग लेते थे–जैसे जल लाना, लकड़ी एकत्र करना, पशुओं की देखभाल आदि। इससे उनमें विनम्रता, सहयोग और आत्मनिर्भरता की भावना विकसित होती थी।

आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः।

–तैत्तिरीयोपनिषद्

अर्थः आचार्य की सेवा और कृतज्ञता के साथ जीवन का पालन करो।

सेवा और गुरु–भक्ति का महत्व।

गांधीजी ने भी भारतीय शिक्षा के संदर्भ में श्रम को शिक्षा का अनिवार्य अंग माना और कहा कि "शिक्षा और श्रम का समन्वय ही सच्ची शिक्षा है।"

7. गुरु की भूमिका और स्थान

वैदिक शिक्षा प्रणाली में गुरु सर्वोपरि स्थान रखता था। वह केवल शिक्षक नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, दार्शनिक और आध्यात्मिक संरक्षक होता था। शिक्षा का स्तर गुरु के ज्ञान और चरित्र पर निर्भर करता था।

राधाकृष्णन के अनुसार भारतीय संस्कृति में गुरु को "ज्ञान का जीवंत प्रतीक" माना गया है। स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा कि सच्चा गुरु वही है जो शिष्य के भीतर निहित शक्ति को जागृत कर सके।

पाश्चात्य विद्वान **मोनियर विलियम्स** ने भारतीय गुरु–शिष्य संबंध को "गहन आध्यात्मिक और भावनात्मक बंधन" बताया है।

मातृदेवो भव। पितृदेवो भव।
आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव

–तैत्तिरीयोपनिषद्

अर्थः माता को देवता समान मानो, पिता को देवता समान मानो, **आचार्य को देवता समान मानो** और अतिथि को देवता समान मानो। वैदिक संस्कृति में गुरु का सर्वोच्च स्थान।

7.1 गुरु के गुण

गुरु से अपेक्षा की जाती थी कि वह विद्वान, सदाचारी, त्यागी, करुणाशील और आत्मसंयमी हो। उसका जीवन स्वयं आदर्श होना चाहिए, क्योंकि विद्यार्थी उसी का अनुकरण करते थे।

मनुस्मृति में कहा गया है कि गुरु को शिष्य के प्रति पिता के समान व्यवहार करना चाहिए।

7.2 गुरु–शिष्य संबंध

यह संबंध श्रद्धा, विश्वास और आत्मीयता पर आधारित था। शिष्य गुरु की सेवा करता था और गुरु उसे ज्ञान प्रदान करता था। यह संबंध केवल औपचारिक नहीं बल्कि जीवनपर्यंत चलता था।

तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः

–भगवद्‌गीता

अर्थः उस ज्ञान को जानने के लिए गुरु के पास विनम्रता से जाओ, श्रद्धा से प्रश्न करो और उनकी सेवा करो। तत्वदर्शी ज्ञानी तुम्हें सत्य ज्ञान प्रदान करेंगे। गुरु–शिष्य परंपरा का मूल सिद्धांत।

अल्तेकर के अनुसार यह व्यक्तिगत शिक्षण प्रणाली आधुनिक कक्षा–आधारित शिक्षा से अधिक प्रभावी थी, क्योंकि इसमें प्रत्येक छात्र पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाता था।

8. विद्यार्थी जीवन एवं अनुशासन

वैदिक शिक्षा में विद्यार्थी जीवन अत्यंत संयमित और अनुशासित होता था। विद्यार्थी में निम्नलिखित गुण होना चाहिए थेः

काकचेष्टा बकध्यानं श्वाननिद्रा तथैव च।
अल्पहारी गृहत्यागी विद्यार्थी पंचलक्षणम्

अर्थः विद्यार्थी को कौए जैसी चेष्टा (सक्रियता), बगुले जैसा ध्यान, कुत्ते जैसी हल्की नींद, कम भोजन करने वाला और घर के मोह से दूर रहने वाला होना चाहिए।

ब्रह्मचर्य आश्रम जीवन का प्रथम चरण माना जाता था, जिसमें आत्मसंयम, अध्ययन और सेवा प्रमुख कर्तव्य थे।

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा अमृतत्वमायन।

–कठोपनिषद्

अर्थः ब्रह्मचर्य और तप के द्वारा देवताओं ने अमरत्व प्राप्त किया।

विद्यार्थी प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व उठते, स्नान करते, संध्यावंदन करते और अध्ययन में संलग्न होते थे। भोजन सादा और सात्त्विक होता था। विलासिता और भोग से दूर रहना अनिवार्य था।

राधाकृष्णन के अनुसार यह अनुशासन "मन और इंद्रियों के नियंत्रण" के लिए आवश्यक था। शारीरिक व्यायाम और कभी–कभी सैन्य प्रशिक्षण भी दिया जाता था, जिससे शरीर और मन दोनों का विकास हो। इस प्रकार शिक्षा वास्तव में सर्वांगीण थी।

9. मूल्यांकन प्रणाली

वैदिक शिक्षा में आधुनिक अर्थों में लिखित परीक्षाओं का प्रावधान नहीं था। मूल्यांकन निरंतर और समग्र होता था। गुरु शिष्य की प्रगति को उसके ज्ञान, व्यवहार, नैतिकता और जीवन शैली के आधार पर परखता था।

विद्यार्थी की सफलता केवल पाठ याद रखने से नहीं, बल्कि उसके आचरण से निर्धारित होती थी। इस दृष्टि से शिक्षा का लक्ष्य अंक प्राप्त करना नहीं बल्कि व्यक्तित्व निर्माण था।

अल्तेकर के अनुसार यह प्रणाली "प्रतिस्पर्धा के स्थान पर आत्मविकास" पर आधारित थी।

10. महिलाओं की शिक्षा

वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था, विशेषतः उच्च वर्गों में। गार्गी, मैत्रेयी और लोपामुद्रा जैसी विदुषियाँ दार्शनिक चर्चाओं में सक्रिय भाग लेती थीं। गार्गी ने याज्ञवल्क्य से ब्रह्मविद्या पर प्रश्न किए, जो उपनिषदों में वर्णित हैं। यह दर्शाता है कि उस समय महिलाओं की बौद्धिक क्षमता को सम्मान दिया जाता था। भारतीय धर्मग्रंथों में देवी को बुद्धि, ज्ञान एवं शक्ति का साक्षात् स्वरूप माना गया है।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः

–देवी महात्म्य

अर्थः जो देवी समस्त प्राणियों में बुद्धि के रूप में स्थित हैं, उन्हें बार–बार नमस्कार है।

अल्तेकर के अनुसार उत्तरवैदिक काल में सामाजिक परिवर्तनों के कारण महिलाओं की शिक्षा सीमित हो गई, किंतु प्रारंभिक परंपरा अत्यंत उदार थी।

एनी बेसेन्ट ने भारतीय संस्कृति की प्रशंसा करते हुए कहा कि प्राचीन भारत में स्त्रियों को उच्च सम्मान प्राप्त था और वे ज्ञानार्जन में पुरुषों के समान सहभागी थीं।

11. वैदिक शिक्षा प्रणाली की शक्तियाँ

वैदिक शिक्षा प्रणाली की सबसे प्रमुख विशेषता उसका सर्वांगीण दृष्टिकोण था। यह केवल बौद्धिक विकास तक सीमित न होकर मनुष्य के शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक सभी आयामों के संतुलित विकास पर बल देती थी। आधुनिक शिक्षा जहाँ प्रायः सूचना और कौशल के अर्जन पर केंद्रित है, वहीं वैदिक शिक्षा व्यक्तित्व के निर्माण को सर्वोच्च लक्ष्य मानती थी।

अल्तेकर के अनुसार इस प्रणाली का उद्देश्य "चरित्र, संस्कृति और आत्मानुशासन से युक्त नागरिक का निर्माण" था। **स्वामी विवेकानन्द** ने भी भारतीय शिक्षा की प्रशंसा करते हुए कहा कि यह "मनुष्य को भीतर से शक्तिशाली बनाती है।"

व्यक्तिगत शिक्षण इसकी दूसरी महत्वपूर्ण शक्ति थी। गुरुकुल में प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी क्षमता, रुचि और प्रवृत्ति के अनुसार मार्गदर्शन मिलता था। इससे शिक्षा यांत्रिक न होकर जीवंत बन जाती थी।

नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा समाज में स्थिरता और सामंजस्य स्थापित करती थी। **आर. के. मुखर्जी** के अनुसार प्राचीन भारतीय समाज की दीर्घकालिक स्थिरता का एक प्रमुख कारण उसकी मूल्यनिष्ठ शिक्षा प्रणाली थी।

इसके अतिरिक्त प्रकृति के समीप रहकर शिक्षा प्राप्त करना भी एक महत्त्वपूर्ण पक्ष था। इससे पर्यावरणीय संवेदनशीलता और सादगी का विकास होता था। **गांधीजी** ने भी भारतीय परंपरा की प्रशंसा करते हुए कहा कि प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन ही सच्ची सभ्यता का आधार है।

12. सीमाएँ

यद्यपि वैदिक शिक्षा प्रणाली अत्यंत विकसित और प्रभावशाली थी, तथापि इसमें कुछ सीमाएँ भी थीं। समय के साथ यह शिक्षा कुछ विशेष सामाजिक वर्गों तक सीमित हो गई, जिससे व्यापक जनसमूह इससे वंचित रह गया।

अल्तेकर के अनुसार उत्तरवैदिक काल में शिक्षा का अवसर मुख्यतः उच्च वर्णों तक सीमित होने लगा, जिससे सामाजिक असमानता बढ़ी।

गुरुकुल प्रणाली का आवासीय स्वरूप भी इसकी सीमा था, क्योंकि यह बड़े पैमाने पर शिक्षा प्रदान करने के लिए उपयुक्त नहीं था। प्रत्येक गुरु सीमित संख्या में विद्यार्थियों को ही शिक्षित कर सकता था।

स्मरण पर अत्यधिक बल के कारण कभी–कभी विश्लेषणात्मक और प्रयोगात्मक चिंतन का विकास सीमित रह जाता था। हालांकि यह पूर्णतः सत्य नहीं है, क्योंकि उपनिषदों में तर्क और संवाद की परंपरा भी विद्यमान थी।

महिलाओं की शिक्षा में भी समय के साथ गिरावट आई, जिससे समाज के आधे हिस्से की प्रतिभा का पूर्ण विकास नहीं हो सका।

पाश्चात्य विद्वान **थॉमस मैकॉले** ने भारतीय पारंपरिक शिक्षा की आलोचना करते हुए इसे आधुनिक विज्ञान के विकास के लिए अपर्याप्त बताया, यद्यपि उनका दृष्टिकोण औपनिवेशिक पूर्वाग्रह से प्रभावित था।

13. पतन के कारण

वैदिक शिक्षा प्रणाली का पतन अचानक नहीं हुआ, बल्कि दीर्घकालीन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तनों का परिणाम था।

प्रथम, शहरीकरण और जटिल सामाजिक संरचना के विकास के साथ गुरुकुल प्रणाली की सीमाएँ स्पष्ट होने लगीं। बढ़ती जनसंख्या के लिए नई प्रकार की संस्थागत शिक्षा की आवश्यकता उत्पन्न हुई।

द्वितीय, बौद्ध और जैन धर्म के उदय के साथ मठों और विश्वविद्यालयोंजैसे तक्षशिला और नालंदा की स्थापना हुई, जहाँ शिक्षा अधिक संगठित रूप में दी जाने लगी।

तृतीय, राजनीतिक अस्थिरता और विदेशी आक्रमणों के कारण अनेक गुरुकुल नष्ट हो गए।

चतुर्थ, मध्यकाल में शिक्षा का स्वरूप धार्मिक संस्थानों तक सीमित होता गया।

अंततः औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली लागू की गई, जिसने पारंपरिक भारतीय शिक्षा को हाशिये पर डाल दिया। मैकॉले की 1835 की शिक्षा नीति का उद्देश्य भारतीयों को "अंग्रेजी मानसिकता वाला" बनाना था।

राधाकृष्णन के अनुसार औपनिवेशिक शिक्षा ने भारतीय परंपरा और आधुनिकता के बीच एक कृत्रिम विभाजन उत्पन्न कर दिया।

14. समकालीन प्रासंगिकता

वर्तमान युग में शिक्षा अनेक चुनौतियों का सामना कर रही है।मूल्यहीनता, प्रतिस्पर्धा, मानसिक तनाव, पर्यावरण संकट और सामाजिक विघटन। इन समस्याओं के समाधान के लिए वैदिक शिक्षा के सिद्धांत अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। मूल्य–आधारित शिक्षा सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिकता को पुनर्स्थापित कर सकती है। **स्वामी विवेकानन्द** ने कहा था कि भारत को ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जो "चरित्रवान और साहसी मनुष्य" तैयार करे।

अनुभवात्मक अधिगम, जिसे आज आधुनिक शिक्षाशास्त्र में महत्वपूर्ण माना जाता है, वैदिक प्रणाली में पहले से ही विद्यमान था।

गुरु को मार्गदर्शक के रूप में देखने की परंपरा आज के मेंटरशिप मॉडल से मेल खाती है। व्यक्तिगत मार्गदर्शन विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविश्वास के लिए अत्यंत आवश्यक है। योग और ध्यान, जो वैदिक परंपरा के अंग हैं, आज विश्वभर में मानसिक स्वास्थ्य के साधन के रूप में स्वीकार किए जा रहे हैं।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी समग्र विकास, भारतीय ज्ञान परंपरा और बहुविषयी शिक्षा पर बल दिया गया है, जो वैदिक आदर्शों के अनुरूप है। **एनी बेसेन्ट** ने कहा था कि यदि भारत अपनी प्राचीन शिक्षा परंपरा को आधुनिक विज्ञान के साथ समन्वित कर सके, तो वह विश्व को नई दिशा दे सकता है।

15. निष्कर्ष

वैदिक शिक्षा प्रणाली मानव इतिहास की एक महान उपलब्धि है, जिसने शिक्षा को जीवन, नैतिकता और आध्यात्म से अभिन्न रूप में जोड़ा। इसका उद्देश्य केवल विद्वान बनाना नहीं, बल्कि ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना था जो आत्मानुशासित, सदाचारी और समाजोपयोगी हो।

यद्यपि ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण इसमें कुछ सीमाएँ उत्पन्न हुईं और अंततः यह प्रणाली कमजोर पड़ गई, तथापि इसके मूल सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं।

डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में भारतीय शिक्षा का आदर्श "ज्ञान और करुणा से युक्त मनुष्य का निर्माण" है। **स्वामी विवेकानन्द** ने भी कहा कि शिक्षा का लक्ष्य मनुष्य में निहित दिव्यता को प्रकट करना है।

आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उपलब्धियों को यदि वैदिक शिक्षा के नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों के साथ समन्वित किया जाए, तो एक ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सकती है जो न केवल आर्थिक प्रगति बल्कि मानवीय उत्कर्ष का मार्ग प्रशस्त करे। इस प्रकार वैदिक शिक्षा प्रणाली अतीत की स्मृति मात्र नहीं, बल्कि भविष्य की शिक्षा के लिए प्रेरणा स्रोत है जिसका मूल उद्देश्य है

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत

अर्थः सभी सुखी हों, सभी निरोग हों, सभी शुभ देखें और कोई भी दुःखी न हो।

संदर्भ

प्रमुख भारतीय विद्वान

1. Altekar, A. S. (1944). *Education in Ancient India.* Banaras Hindu University.
2. Mukherjee, R. K. (1960). *Ancient Indian Education.* Delhi: Motilal Banarsidass.
3. Sharma, R. N. (2002). *History of Education in India.* New Delhi: Atlantic Publishers.
4. Radhakrishnan, S. (1953). *The Principal Upanishads.* London: Allen & Unwin.
5. Radhakrishnan, S. (1929). *Indian Philosophy* (Vol. I–II). London: George Allen & Unwin.
6. Vivekananda, Swami. *Complete Works of Swami Vivekananda.* Advaita Ashrama.

प्राचीन ग्रंथ

7. Rigveda (Various translations)
8. Upanishads (Brihadaranyaka, Chandogya, Katha, etc.)
9. Bhagavad Gita
10. Manusmriti
11. Vishnu Purana

आधुनिक एवं तुलनात्मक अध्ययन

12. Basham, A. L. (1954). *The Wonder That Was India.* London: Sidgwick & Jackson.
13. Mookerji, Radhakumud. (1951). *Ancient Indian Education.* Delhi: Motilal Banarsidass.
14. Besant, Annie. (1904). *The Education of Indian Women.*
15. Müller, Max. *Sacred Books of the East* (Series). Oxford University Press.

समकालीन नीति दस्तावेज

16. Government of India. (2020). *National Education Policy 2020.* Ministry of Education.